द्वितीय अध्याय

पृ. 26--42

"भ्रमभंग" उपन्यास की कथावस्तु

द्वितीय अध्याय

"भ्रमभंग" उपन्यास की कथावस्तु

१] उपन्यास : स्वरूप

आज के उपन्यास साहित्य की विधा जीवन और यथार्थ के अधिक निकट रही है। "आज का उपन्यासकार मुख्यत: विचारतत्व को अभिव्यक्ति देने का प्रयत्न करता है। इस प्रयत्न में वह औपन्यासिक शिल्प-विधि के परम्परागत तत्वों के प्रति उदासीन भी हो रहा है।"[१] आज के उपन्यासकार का मुख्य ध्येय कथ्य का सम्प्रेषण रहा है। कथ्य के आयामों के सघनता प्रदान करने के लिए वह आवश्यकतानुसार शिल्प रूप का निर्माण करता है।

किसी भी रचना के शिल्पगत अध्ययन के अन्तर्गत उसकी संवेदना के धरातल, उसके कथ्य सम्प्रेषण, उसकी प्रतिबध्दता के आयाम, जीवन दृष्टि का निरूपण, अभिव्यक्ति की कुशलता - भाषा शैली आदि का अध्ययन किया जाता है। उपन्यास युग तथा समाज के संदर्भ में बदलते मानवजीवन का व्यापक चित्र प्रस्तुत करता है। उपन्यासकार मानवजीवन के उस अंश को ही चित्रित करता है, जिसे वह अपने मन्तव्य को स्पष्ट करने के लिए आवश्यक समझाता है। यह मन्तव्य उसके व्यक्तित्व के अनुरूप होता है। इसतरह विषय - चयन में रचनाकार की रुचि का भी विशेष महत्व है। इसी विषय को कलारूप में ढालने की प्रक्रिया शिल्प-विधि है। इस प्रक्रिया में विभिन्न उपकरणों का उपयोग होता है।

२] उपन्यास के तत्व

सामान्यत: औपन्यासिक शिल्पविधि के निम्नलिखित विभिन्न तत्व हैं।

१. प्रत्येक औपन्यासिक रचना में लेखक का उपना उद्देश्य हो ता है, जो उसकी विचारधारा के अनुरूप होता है ।
२. उसीको संप्रेषित करने के लिए वह उपयुक्त कथावस्तु का सहारा लेता है ।
३. उद्देश्य की अभिव्यक्ति के लिए कथा-वस्तु में कुछ घाटनाओं का निर्माण किया जाता है । इन घाटनाओं के पीछे व्यक्ति व्यवहार होते हैं । चरित्र - निर्माण इन्हीं घाटनाओं का परिणाम है ।
४. चरित्रा-चित्राण एवं कथानक में सजीवता एवं स्वाभाविकता लाने के लिए संवाद - योजना की जाती है ।
५. घाटनाओं एवं पात्रों को यथार्थ, सजीव, विश्वसनीय एवं प्रभावोत्पादक बनाने के लिए देश-काल का यथा तथ्य चित्राण होता है ।
६. विषाय की अभिव्यक्ति के लिए लेखाक जिस विशेषा ढंग को अपनाता हे वह उसकी शैली अर्थात् प्रस्तुति शिल्प है ।
७. उपर्युक्त सभी तत्वों को मूर्त रूप देने के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व. भाषा है । वास्तव में पात्रों, परिस्थितियों एवं वातावरण की विश्वसनीयता तथा यथार्थता सक्षम भाषापर निर्भर है ।

३] अध्ययन की सीमा

देवेशाजी ने "भ्रमभंग" उपन्यास में शिल्पगत प्रयोगधर्मिता प्रस्तुत की है । उपन्यास का कथ्य सर्वविदित होते हुए भी देवेशाजी की शिल्पगत प्रयोगधर्मिता कथ्य को कलात्मक तथा आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करने में सहायक हुयी है ।

"भ्रमभंग" के कथ्य को लेकर आजतक अनेक विद्वानों ने बहुत कुछ लिखा है । लेकिन "भ्रमभंग" के प्रस्तुति शिल्पपर [भाषा तथा शैलीगत अध्ययन] अभीतक गंभीरता से विचार नहीं किया गया है । अत: इस लघुशोध प्रबंध में "भ्रमभंग" उपन्यास के अन्य उपकरणों का सामान्य रूप से विश्लेषाण

करके उसके प्रस्तुति-शिल्प का सूक्ष्मता के साथ साधार विवेचन किया है |

४] कथावस्तु : स्वरूप

विभिन्न घटनाओं घात-प्रतिघातों से मिलकर उपन्यास की जो कहानी बनती है उसे "वस्तु", "कथावस्तु" या कथानक कहते हैं | जीवन के विस्तृत क्षेत्र में कुछ घटनाओं और स्थितियों को चुनकर उपन्यासकार इस ढंग से सँजोता है कि वे परस्पर जुडी हुई सी प्रतीत होती है और सुसम्बध्द कथा का रूप ले लेती है | इस कथा में पाठकों का मन तभी रमता है जब उन्हें इसमें अपना चित्र दिखाई दें | कथावस्तु की इस विशेषाता का नाम "स्वाभाविकता" है | एक अच्छी कथावस्तु की यह प्रथम कसौटी है |

कथावस्तु की दूसरी कसौटी है रोचकता | मनुष्य का हृदय भावनाओं का भूखा रहता है | अत: जिस कथावस्तु में भावात्मकता के क्षण जितने अधिक होंगे वह उतनी ही रोचक सिध्द होती हैं | घटनाओं को ऐसा नाटकीय मोड देना कि पाठक उसका परिणाम जानने के लिए उत्सुक रहता है | उसका कुतूहल जागृत होता है और उसमें वह इतना तन्मय हो जाता है कि उपन्यास को पूरा पढे बिना वह उसे छोडता नहीं |

सुगठितता उपन्यास की कथावस्तु का तिसरा अनिवार्य गुण है | जिसप्रकार एक शृंखाला की एक कडी दूसरी से और दूसरी कडी तीसरी से जुडी रहती है | किसी एक कडी के टूट जाने से पूरी शृंखाला ही बिखार जाती है | उसीप्रकार उपन्यास की घटनाओं में परस्पर कारणकार्य सम्बन्धा व्दारा जुडा होना आवश्यक है | हर घटना जहाँ पहले की किसी अन्य घटना का परिणाम हो वहाँ आगे की नई घटना के लिए अवसर प्रस्तुत करने का कारण भी बने | इसी में कथावस्तु के गठन का कौशाल निहित है | कथावस्तु की रोचकता बहुत कुछ इसी शृंखालाबध्दता पर आधारित है |

५] शीर्षक : स्वरूप

उपन्यास का शीर्षक अथवा नामकरण उसका दर्पण है । जिस प्रकार व्यक्ति की मुखमुद्रा उसकी मानसिक भावनाओं का आभास करा देती है [Face is the mirror of heart] उसीप्रकार कहानी का शीर्षक अनायास उसके कथ्य, प्रतिपाद्य और उद्देश्य के प्रति पाठक के मन में सहज कुतूहल जागृत कर देता है । अनेक कहानियों का वास्तविक मर्म तो रहता ही उसके नामकरण में है । प्रतीक, व्यंग्य अथवा लक्षणिकता - युक्त शीर्षक विशेष उपयुक्त माने जाते है ।

किसी भी साहित्यिक रचना के नामकरण के मूल में अनेक प्रकार के कारण एवं मनोवृत्तियाँ रहा करती हैं । शास्त्रीय पध्दति के अनुसार उपन्यास का नाम या तो उस उपन्यास में आरम्भ से अन्ततक छाये रहनेवाले पात्र के नाम के आधारपर होना चाहिए अथवा उपन्यास की प्रमुख घटना के आधार पर । यदि पात्र के नाम के आधारपर उपन्यास के नामकरण में पात्र नायक या नायिका बनने के समस्त आवश्यक गुणों से युक्त हो और वह उपन्यासकार को विचारधारा का भी प्रतिनिधित्व कर रहा हो । कथ्य का केन्द्रीय भाव उसमें केन्द्रित रहना अनिवार्य है ।

उपन्यास का शीर्षक छोटा होना चाहिए, लम्बा, बडा शीर्षक आकर्षक नहीं लगता । उपन्यास का शीर्षक पाठक की उत्सुकता बढानेवाला होना चाहिए । उपन्यास का शीर्षक पढकर लेखक के उद्देश्य का थोडासा संकेत मिलना चाहिए । याने कि शीर्षक सांकेतिक होना चाहिए । शीर्षक काव्यात्मक और व्यंजना से युक्त होना चाहिए । प्रतीकात्मक शीर्षक भी आकर्षक होता है । ये सभी बातें हो तो उपन्यास का शीर्षक सार्थक होता है । उपन्यास का शीर्षक जिज्ञासा उत्पन्न करनेवाला हो और केन्द्रिय भावानाओं को प्रकट करनेवाला हो । उपन्यास का शीर्षक चमत्कारपूर्ण हो ।

शीर्षक विषय से सीधे संबंधित हो, फिर भी एक विशिष्टता लिए हुए शीर्षक सदा आकर्षक होते हैं ।

६] "भ्रमभंग" की कथावस्तु

१९७५ के हिन्दी उपन्यासों का सर्वेक्षण प्रस्तुत करते हुए डॉ. गोपालराय ने अपनी समीक्षा पत्रिका में लिखा है --""भ्रमभंग" एक नये, लगभग अछूते अनुभाव को संपृक्त होने के कारण इस वर्ष की एक विशिष्ट कृति बनने में सफल हुआ है | १९७५ में प्रकाशित उपन्यासों मे सर्वाधिक उल्लेखानीय उपन्यास है |"[१]

"भ्रमभंग" २०४ पृष्ठों एवं २० अध्यायों में प्रस्तुत किया है | नायक चन्दन ने आत्मकथात्मक शैली में कथ्य का प्रतिपादन किया है | विभिन्न अध्यायों में प्रस्तुत कथा-वस्तु का संक्षिप्त विवरण इसप्रकार है |-

[क] अध्यायगत विवरण

१. देहरादून के चन्दन को पालीवाल से तारव्दारा सूचना मिलती है कि, ५ हु जुलाई को बम्बई में सिटी कॉलेज में लेक्चरर के पद के लिए इण्टरव्यूव है | चन्दन के पास केवल पाँच-सात रुपये थे | किसीतरह मित्रों से ४० रुपये माँग जाँच कर बम्बई निकल जा पडता है |

२. बम्बई में रेल-यात्रा में जेब कट जाती है और टी.सी. की मेहरबानी से चन्दन भारत लॉज पहुँचता है | इण्टरव्यूव में वह बोर्ड के सदस्यों को प्रभावित करता है |

३. देहरादून वापस आकर वह प्रोफेसर शर्मा की धर्मपत्नी की ट्युशन तीस रुपये महावार में पकडता है | मित्र सुरेन्द्र को बनारस में लेक्चररशिप मिलती है | तार व्दारा चन्दन को बम्बई के कॉलेज में लेक्चरर की नियुक्ति की सूचना मिती है | चन्दन नजीबाबाद जाकर अपने माँ-बाप के आशीर्वाद लेता है और बम्बई में नौकरी ज्वाइन करता है |

४. सिटी कॉलेज के विद्यार्थी प्रारंभ में उसे तंग करते हैं | चन्दन उन्हें अपने व्यक्तित्व से अपनी ओर आकर्षित करता है | जुहू के समुद्रतट पर बैठकर चन्दन प्रेयसी मेघा की याद करता रहता है |

५. सुरेन्द्र, मेघा, नरेन्द्र, जितेन्द्र एवं पिताजी को इस अध्याय में पत्र लिखे गये हैं | इस पाँच पत्रों में चन्दन पर संयुक्त परिवार की जिम्मेदारियों

का बोझ, मेधा के प्रति उसका प्रेम एवं शिक्षा तथा साहित्य में व्याप्त भ्रष्टाचार के प्रति उसका आक्रोश व्यक्त हुआ है।

६. भारत लॉज के निवासियों का व्यंग्यात्मक शैली में चित्राण। चन्दन पाँच वर्षांतक इस लॉज में रहता है। अचानक बीमार पडकर वह अस्पताल जाता है। इतने में पिताजी का शिकायतभरा पत्र मिलता है कि, कुन्दन बिगड रहा है और बहन चम्पा अंग्रेजी में फेल हो गयी है।

७. सिटी कॉलेज की छात्रा शोभा कृपलानी चन्दन के सामने विवाह का प्रस्ताव रखाती है, लेकिन चन्दन गुरुशिष्या का नाता होने के कारण इस प्रस्ताव को ठुकराता है। देहरादून की प्रेयसी मेधा भाटनागर के पिताजी बम्बई आकर चन्दन को अपने भावी दामाद के रूप में देखाने के लिए आते है। लेकिन चन्दन की आर्थिक दुरावस्था तथा निवास-व्यवस्था को देखाते हुए अपना निर्णय बदलते हैं। इतने में चन्दन को सौराष्ट्र कॉलेज, राजकोट में तबादले का आदेश मिलता है। चन्दन राजकोट जाता है।

८. चन्दन को राजकोट में आते ही प्रेयसी मेधा भाटनागर के व्याह की निमंत्राण पत्रिका मिलती है। चन्दन का मन घायल होता है। उसका यह पहला भ्रमभंग है। चन्दन पीएच.डी. के लिए प्रबंध लिखाने में अपने को व्यस्त रखाता है।

९. चन्दन राजकोट कॉलेज में प्रो. मिस सुमन शाह से परिचय और घनिष्टता बढाता है। चन्दन उसकी सुन्दरता तथा प्रेम को देखाकर उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखाता है। लेकिन वह अपने को चन्दन के योग्य न मानकर उसके प्रस्ताव को अस्वीकृत करती है।

१०. कॉलेज की छुट्टियाँ होते ही चन्दन राजकोट से बम्बई आता है। उसे पीएच.डी. की डिग्री मिल जाती है। अब बम्बई में ही उसे हिन्दु कॉलेज में लेक्चरर की नौकरी मिल जाती है। दो सौ पचास मासिक तनख्वाह उसे मिलती है। परिवार को अधिक सुविधा दिलाने के लिए वह पैसे के लिए हर तरह की लिखाई करता है।

११. अक्तुबर की छुट्टी में चन्दन अपने घर नजीबाबाद जाता है। लेकिन परिवार में उसे किसीसे अपनेपन का भाव नहीं मिलता। बम्बई लौट आता है और एक मिल के पत्र में शुभी का उल्लेख मिलता है। जिसका प्रस्ताव ब्याह के लिए जितेन्द्र ने रखा था। शुभी दिल्ली में नर्स है और तीन सौ महिना कमाती है।

१२. चन्दन का शुभी के साथ सादगीपूर्ण ब्याह होता है। अब शुभी पहली सन्तान की माँ बननेवाली है। नगर इस सुखाद घटना का स्वागत परिवार के सदस्यों में ठंडे दिल से करते हैं। चन्दन को यह बात खटकती है।

१३. बम्बई में कॉलेज के प्राध्यापक निवास में चन्दन को बड़ा फ्लैट मिल जाता है। भाभी सन्तान का नाम आभा या आशिशा रखाने की सोचता है।

१४. इस अध्याय में पिताजी, जितेन्द्र और सुमन शाह के नाम चन्दन पत्र लिखाता है। इन पत्रों में वह पारिवारिक जिम्मेदारियों को लेकर विस्तृत विवरण लिखाता है। मित्र पालीवाल की शादी होजाती है। उसकी पत्नी टीचर है।

१५. शुभी - चन्दन की पहली सन्तान लडकी हुयी। चन्दन की माता-पिता की आर्थिक अपेक्षायें दिन-ब-दिन बढती गयी।

१६. चन्दन, आभा और आरती दो बेटियाँ का पिता बन गया है। आर्थिक तंगी बढती जाती है। माँ और भाई को चन्दन ने बम्बई फ्लैट में अपने पास बुलाया है। शुभी नर्स की नौकरी घर में भी करती है। पिता का ॲक्सिडेंट हो जाता है। माँ देहरादून चली जाती है। कुन्दन आवारा, निकम्मा बनता जा रहा है। आरती बीमार पडी है। उसे अस्पताल ले जाना पडता है। शुभी की बहन शांति कॅन्सर से पीडित है। वह भी बम्बई में आती है। शुभी तीसरी बार माँ बननेवाली है। आर्थिक परिस्थिति को देखाकर चन्दन उसका गर्भपात करवाने का निर्णय करता है।

१७. बम्बई में शुभी की बहन शांति तो मरीज बनकर आयी थी | और देहरादून से चन्दन के पिता भी बम्बई में इलाज के लिए आते हैं | बहन चम्पा फ्लैट में भाई के साथ न रहकर होस्टल में रहकर बी. एड्. कर रही है | कुन्दन घर से बाहर जाता है | शांति एवं चन्दन के पिता की मृत्यू हो जाती है |

१८. चन्दन अपनी बहन चम्पा के स्वैराचारी आचरण से त्रास्त है | उसकी इच्छा के विरुध्द वह रघुमल मैकॅनिक के साथ घर से भागकर शादी करती है |

१९. चम्पा की शादी हो जाने के बाद माँ बेटी के यहाँ चक्कर लगाती रहती है और दोनों चन्दन और शुभी को बदनाम करते रहते हैं |

२०. पारिवारिक परेशानियों के कारण चन्दन दिल की बीमारी का मरीज बनता है | अस्पताल में उपचार शुरु होते हैं | माँ और बहन चन्दन की इस परिस्थिति में भी उसके प्रति उपेक्षा का भाव रखाती हैं | माँ के विचित्र स्वभाव से उबकर सम्बन्ध तोड लेने का निर्णयचन्दन करता है और एक नयी जिन्दगी प्रारम्भ करने का संकल्प करता है |

ख] कथावस्तु का विश्लेषाण

देवेश ठाकुर ने अपने "भ्रमभंग" उपन्यास में निम्नमध्यवर्ग के एक ईमानदार व्यक्ति का एक चित्र गहरे रंगों से चित्रित किया है | आर्थिक अभावों, रुढियों, निषेधों, कुण्ठाओं और तणावों में एक निम्नमध्य वर्ग का व्यक्ति "चन्दन नेगी" जीवन व्यतित करता है | चन्दन के भीतरी और बाहरी संघार्षो का एक विस्तृत दस्तावेज "भ्रमभंग" में है | देवेश ठाकुर के जीवन में जो विभिन्न व्यक्ति संपर्क में आये हैं, उनके चरित्रों और अपने वैयक्तिक जीवन में अनुभूत किये गये क्षणों को संयोजित करके उन्होंनें "भ्रमभंग" उपन्यास की कथावस्तु बनाई है |

चन्दन नेगी व्यक्ति का पूरा जीवन ही इस उपन्यास की मुख्य कथावस्तु है | चन्दन नेगी नजीबाबाद और देहरादून में प्रतिकुल परिस्थितियों में संघार्ष करते हुए एम. ए. करता है | उसका भविष्य अनिश्चित है | उसके पिता रिटायर्ड पुलिस कर्मचारी थे | उनकी इच्छा थी कि उनका बेटा फौज

में हवालदार बने। लेकिन चन्दन को मात्र अपनी उन्नति की चिंता नहीं थी, बल्कि उसका सपना था कि, उसके परिवार के सभी सदस्यों का स्तर बढे। लेकिन एक आम भारतीय शिक्षित युवक की तरह ही चन्दन को बेरोजगारी की समस्या से उसके जीवन में घोर निराशा का अंधाकार फैल गया था।

इतने में बम्बई से मित्र रमेश पालीवाल से सिटी कॉलेज में लेक्चररशिप के लिए इन्टरव्यू की सूचना आती है। बम्बई तक पहुँचने के लिए किराये के लिए मित्रों से पैसे और कपडों का इंतजाम करते हैं। अन्ततः चन्दन बम्बई के सरकारी सिटी कॉलेज में हिन्दी का व्याख्याता हो जाता है। एक साधारण से लॉज में कम किराये पर अनेक असुविधाओं में चन्दन पालीवाल के साथ रहता है। एक सौ पचास विद्यार्थियों की कक्षा में हिन्दी के प्रति अरुचि रखानेवाले विद्यार्थियों को पढाना भी एक चुनौती थी। नजीबाबाद से हरसमय जो खात आते थे उनमें अधिक पैसे भेजने का घर के सदस्यों का आग्रह रहता था। इसलिए चन्दन को यह अध्यापकीय पेशे का नया जीवन भी दुःसह और बोझील लगने लगा। कहीं भी आशा के किरण नजर नहीं आते थे लेकिन एक सपनीली छाया देहरादून में थी। वह है मेघा जिससे वह प्रेम करता है और विवाह करना चाहता है। चन्दन उस आशा के बलपर जीवित रहता है, परन्तु मेघा के पिता चन्दन की होटल की जिन्दगी देखकर विवाह से इन्कार कर देते हैं।

चन्दन का तबादला बम्बई से राजकोट हो जाता है। चन्दन राजकोट में नये सिरे से अपने जीवन को सँवारने का प्रयत्न करता है। परन्तु घर से आये हुए हर पत्र में शिकायतें और अधिक धन भेजने की माँग रहती थीं। माता और पिता के पवित्र रिश्ते सिर्फ धनपर ही आधारित थे। परिवार की किसी भी सदस्य को इस बात की चिंता नहीं रहती थी कि चन्दन कैसे जीवन व्यतीत कर रहा है? उसकी क्या पीडा है? इसलिए चन्दन का जीवन अत्यन्त उदास, विषाण्ण और निराशामय था।

इतनें में उसके जीवन में प्रो. सुमन शाह आती है। वह उम्र में चन्दन से बडी थीं। उसी के कॉलेज में प्राध्यापिका थी। अविवाहिता थी। चन्दन उसे चाहता है और उसके साथ विवाह भी करना चाहता है, लेकिन प्रो. सुमन उसके प्रति आकर्षित होते हुए भी स्नेहवश चन्दन से इन्कार कर देती है। इस घटना से चन्दन पूरी तरह से टूट जाता है। और राजकोट के उस वातावरण से मुक्त होने के लिए चन्दन बम्बई के एक प्राइवेट कॉलेज में प्राध्यापक की नौकरी पाता है। परिवार के सभी सदस्यों से जो अवास्तव माँगे होती थी, उससे चन्दन अत्यंत निराश होता था। और उसका यह विश्वास हो गया है कि परिवार को ऊपर उठाने का उसका सपना पूरा नहीं हो सकता। वह सिर्फ भ्रम था क्योंकि मध्यमवर्गीय व्यक्ति मात्र अपनी कमाई से न तो अपने परिवार को पाल सकता है न उसे ऊपर उठा सकता है। इसलिए वह एक दिल्ली की नर्स शुभी से विवाह कर लेता है। उसकी आमदनी और अपनी तनख्वाह से वह अपने परिवार को सुखी रखना चाहता है।

समय के साथ चन्दन दो पुत्रियों आभा और आरती का पिता बन जाता है। चन्दन यह महसुस करता है कि उसके माँ और पिता को उसके विवाह से और पिता बनने से काई प्रसन्नता नहीं हैं, क्योंकि उन्हें डर था कि चन्दन अब उन्हें पैसे कम भेजेगा। परिवार के सदस्यों का यह स्वार्थ और ओछापन चन्दन को कहीं भीतर तक चीरता जाता है। लेकिन उसके मध्यवर्गीय संस्कार उसकी नैतिकता उसे परिवार से जोडी रखाती है। पूरा परिवार बम्बई में चन्दन के यहाँ हमेशा के लिए रहने के लिए आता है। उसका भाई कुन्दन बेजिम्मेदार और आवारागर्दी करनेवाला युवक है। चम्पा स्वार्थी है और घर में उसका व्यवहार कमीनेपन का होता है। चन्दन के घर परिवार-जनों के बीच सदैव फुसफुसाहटें चलती हैं। इस वातावरण में चन्दन को लगता है, मानों उसके चारों ओर अविश्वास और अजनबीपन फैलता जा रहा है। अविश्वास को एक अदृश्य दीवार चन्दन और परिवार के मध्य खडी हो जाती है।

परिवार के समस्त सदस्यों के लिए चन्दन ने बहुत बडी कुर्बानी अपनी भरी जवानी में की थी। और उन्हीं लोगों के व्दारा दसप्रकार का ओछा व्यवहार उसके हृदय को घृणा और आक्रोश से भर देता है।

इसी बीच शुभी की बहन शांती की मृत्यु होती है और कुछ दिनों के बाद चन्दन के पिता की मृत्यू होती है। इस बिकट परिस्थिति में भी कुन्दन और चम्पा का बर्ताव स्वैराचार का रहता है। चम्पा अपने बडे भाई चन्दन की इच्छा के विरूध्द रेल्वे के एक साधारण मैकॅनिक रघ्घूमल से विवाह कर लेती है। माँ इन सब कार्यों में चम्पा का साथ देती है। चन्दन को लगता है कि एक षाडयंत्र उसके चारों ओर बुन दिया गया है। मन में घृणा फूलने लगती है, -"माँ और बहिन के रिश्ते। कैसे रिश्ते? कैसा खून - कैसा प्यार? ये तो गैंग्रीन हैं। जिंदा रहना है तो अपने शरीर से इन्हें काटकर फेंक देना होगा।"[3] जब घृणा फैलने लगती है, तो उसे लगता है, -"जी तो करता है अभी किचिन में जाऊँ और दोनों को नंगा कर दूँ।"[4]

संस्कारों के कारण चन्दन कुंठाओं में जीवन व्यतीत करता है। बाहरी और भीतरी संघार्ष चन्दन को तोडने लगते हैं। उसे हृदयरोग की बीमारी हो जाती है। परिवार के भविष्य को लेकर जो भ्रम चन्दन ने पाले थे वे सब भंग हो जाते हैं। चन्दन को जिन्दगी दुष्वार लगती है। "मेरे लिए तो जिंदगी ही गोबर बन गयी है। .... न इसे जी सकता हूँ, न इससे मुक्त ही हो सकता हूँ। जीना और मरना - दोनों मेरे लिए दूभर हो गये है।"[5] उसे लगता है, -"सारा घर जैसे बदबुआ रहा है। आदमी ही सबसे ज्यादा बदबू छोडता है। इस बदबू में उन गन्दे दिमागों के बीच, मैं नहीं रह सकूँगा।"[6] अन्त में चन्दन निर्णय लेने की मुद्रा में आ जाता है, -"निर्णय यही कि गलत, गलत है। उसे सहो मत। सही, सही है। वह कहीं भी हो, किसी का भी - उसे स्वीकार करो। अपने सन्दर्भ में, अपनों के संदर्भ में मत सोचो।"[7]

मौं का चम्पा के स्वैराचार का समर्थन करना चन्दन को अच्छा नहीं लगता है। चन्दन को लगता है, कि उसने ईमानदारी से परिवार के सभी लोगों के उत्थान की कामना की थी और उसके लिए अपने वैयक्तिक जीवन के समस्त सुखासुविधाओं को तिलांजली दी थी। लेकिन उसके बदले में परिवार से उसे जो व्यवहार मिल रहा है, वह गलत है। अन्त में चन्दन अपने मौं के सामने फैसला रख देता है, -"चम्पा या चन्दन में से एक को चुनना होगा। मौं का कर्तव्य निभाये बिना वह चन्दन से सिर्फ अधिकार चाहती है। परन्तु बिना किसी अधिकार के चम्पा के प्रति कर्तव्य पूरा करती है। चन्दन के मन में एक विद्रोह खडा हो जाता है, -"मध्यमवर्ग कोई कोई व्यक्ति होता तो वहीं चौराहे पर नंगा करके उस पर थूक देता। लेकिन वह व्यक्ति कहाँ है। वह तो एक मेण्टैलिटी है। एक सडाँध से भरी हुई प्रवृत्ति। इस सडाँध से कब मुक्ति मिलेगी हमें?"[८]

मध्यवर्गीय संस्कार व्यक्ति को इतना बिजलिजा बना देते हैं कि, "न तो वह बिना टिकिट यात्रा का साहस जुटा पाता है, न शोभा कृपलानी जैसी अभिजात्य युवती के विवाह के प्रस्ताव को स्वीकार कर पाता है, न आत्महत्या कर पाता है और न किसी साहसिक निर्णय की भूमि पर ही पहुँच पाता है। वह जिन्दगी और मौत के बीच एक अधमरी अनिर्णय की स्थिति में झूलता रहता है। परन्तु "भ्रमभंग" का नायक "बोल्ड" है। अन्ततः वह निर्णय ले ही लेता है।"[९]

चन्दन को विश्वास हो जाता है कि, बिना किसी साहसिक निर्णय के व्यक्ति को मुक्ति नहीं मिल सकती अतः अन्त में चन्दन विवश होकर मौं को हमेशा के लिए चम्पा के पास चली जाने के लिए कहता है और उसके जाने के बाद कमरों को पानी उलीच-उलीच कर साफ कर देता है। सडे हुए संबंधों की गंदगी को साफ करने के बाद भी चन्दन को पहली बार वह घर अपना घर लगता है।

चन्दन नयी जिन्दगी का प्रारम्भ करते हुए उपन्यास के अंत में कहता है कि, "तुम मत सोचो चन्दन। तुम्हें बस इतना सोचना है कि, तुम ऐसे पिता न बनों। और शुभी ऐसी मौं न बने ....। बस।"[१०]

ग] कथावस्तु की विशेषताएँ

वस्तुत: उपन्यासकार उन्तरालों में उभरे हुए विभिन्न चरित्रों और खाण्डों में जीये गए विभिन्न क्षणों को संयोजित करके उपन्यास की कथावस्तु बनाते हैं। लेकिन देवेशाजी ने एक ही व्यक्ति के जीवन के खाण्डों में जीये गए विभिन्न खाण्डों को संयोजित करके "भ्रमभंग" उपन्यास की कथावस्तु सशक्त रूप में बनाई हैं। इसलिए इसकी यथार्थता पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करती है। और उन्हें झकझोरती है। चन्दन की व्यथा-कथा वैयक्तिक न होकर प्रातिनिधिक प्रतीत होती है। अत: कथावस्तु में एक प्रकार से स्वाभाविकता आयी है।

"भ्रमभंग" की कथावस्तु की प्रस्तुति आत्मकथात्मक शैली, चेतना प्रवाह शैली, डायरी शैली, पत्रात्मक शैली आदि विविध शैलियों का आकर्षक ढंग से प्रयोग होने के कारण कस्थावस्तु में रोचकता भी है। देवेशाजी के व्दारा प्रयुक्त समन्वित भाषा-शैली के कारण कथावस्तु में आकर्षकिता तथा रोचकता आयी है। उपन्यास का शीर्षक सार्थक तथा यथार्थ होने के कारण कथावस्तु को लेकर पाठकों के मन में कुतूहल तथा जिज्ञासा जागृत होती है।

"भ्रमभंग" की कथावस्तु मौलिक है। इसकी कहानी देवेशाजी की जीवनी की सच्ची कहानी है। वास्तव में उपन्यासकार की कथानक में मौलिकता तभी आती है, जब उसे जीवन का यथार्थ रूप में प्रखार अनुभव प्राप्त हुआ हो। उपन्यासकार अपने कथानक में अनुभूत्यात्मक मौलिकता उत्पन्न कर सकता है। "भ्रमभंग" में इसी प्रकार की मौलिकता है।

७. शीर्षक की सार्थकता

"भ्रमभंग" उपन्यास के शीर्षक का कथावस्तु तथा मूल प्रतिपाद्य से गहरा सम्बन्ध है। शीर्षक काव्यात्मक अथावा प्रतीकात्मक न होते हुए भी वह "टची" है। शीर्षक "भ्रमभंग" पढते ही लेखाक के उद्देश्य का थोडासा संकेत भी मिलता है।

एक निम्न मध्यवर्गीय युवक के स्वप्नों एवं महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति में समाज व्यवस्था एवं परिवार सभी बाधक हो जाते हैं। नायक चन्दन ने परिवार को अपने साथ लेकर चलने और उसे ऊँचा उठाने का जो सपना देखा था, वह भ्रम मात्र था, जो धीरे धीरे भंग होता गया।

माँ का भ्रम, संयुक्त परिवार के पोषाण का भ्रम तथा प्रेम का भ्रम खण्डित करता हुआ अर्थात् भ्रमभंग करता हुआ अर्थात् विद्याधाओं और चिन्ताओं को समाप्त करता हुआ अन्ततः चन्दन निर्णय लेता है, -"यह धुला हुआ घर मेरा है ....।"[11] बबबू वाले घर तथा बदबूदार आदमियों की सफाई करके वह एक "साफ और धुली हुई" मामूली जिन्दगी की शुरुआत करता है।

चन्दन के पिता पुलिस विभाग में होने के कारण अपने बेटे को भी पुलिस में भार्ती करना चाहते थे। रिटायर होने के बाद वे आर्थिक रूप से अपने बेटे पर अवलंबित रहते हैं। आर्थिक तणाव से पितृ-प्रेम के परम्परागत मूल्य टूट जाते हैं। सिटी कॉलेज की लेक्चररशिप को चन्दन अपने जीवन की बहुत बडी उपलब्धि मानता है, लेकिन विद्यार्थियों के विचित्र व्यवहार के कारण उसका यह भ्रम भी टूट जाता है। शिक्षा-जगत् का आदर्शवाद उसको खोकला जब नजर आता है और उस क्षेत्र में जो उन्होंने सपने रखे थे वे सब टूट जाते हैं। -

"बडी-बडी युनिवर्सिटियाँ हैं। बडे-बडे विभागाध्यक्ष है। ये सब वटवृक्ष हैं। इनकी छाया में सुस्ता सकते हो। अर्थात्, निष्क्रिय निष्क्रिय बन सकते हो। विकसित नहीं हो सकते। नीचे और ऊपर सब जगह उनकी जडे फैली हैं। तुम थोडा भी कसमसाये कि उनकी चाप दबोचती मिलेगी।"[12]

मेघा भटनागर को प्रेयसी से पत्नी बनाने के लिए आतुर चन्दन उसके ब्याह का निमंत्राण पाकर टूट जाता है। उसे ज्ञान प्राप्त होता है,- "यह जिन्दगी जो है, भ्रमों की शृंखला है। भ्रम बनते हैं, पलते हैं और फिर भंग हो जाते हैं। यह सब स्वाभाविक है।"[13] राजकोट में वह प्रोफेसर कुमारी सुमन शाह के सान्निध्य में सपने बुनने लगता है लेकिन उस

में बडी और अनुभावी सुमन स्वयं उसका स्वप्न भंग कर देती है, -"तुम बहुत संवेदनशील हो, तुम्हारी साथिन भी ..... संवेदनशील होनी चाहिए।"[१४]

माता-पिता, भाइयों एवं इकलौती बहन चम्पा के प्रति चन्दन के मन में अत्याधिक स्नेह और ममत्व है। उनको खुश रखने के लिए, उनकी जरूरतों को वह हमेशा पूरा करता है। इसके लिए उन्होंने नौकरी के अ अतिरिक्त अनेक छोटे-छोटे काम किए। लेकिन वे चन्दन की मजबूरी को उसकी परशानियों को नहीं समझ पाये। उन्हें लगता है कि चन्दन और शुभी दोनों बहुत पैसा कमाते हैं। माता-पिता स्वार्थान्ध होकर अपने बेटे की भावनाओं एवं महत्वाकांक्षाओं को अनदेखा कर देते हैं। फिर भी संघार्ष का आदि चन्दन उन्हें जिलाए रखने के लिए संघार्ष करता चला जाता है। वह आधुनिक श्रवणकुमार बना हुआ है, लेकिन माता-पिता, भाई-बहनों के टुच्चे, ओछे एवं छिपाव-दुराव भरे विचित्र व्यवहार से टूट जाता है।

चन्दन सोचने लगता है कि, कोमल समझो जानेवाले निष्प्राण रिश्तों के बारें में भावुक होने से क्या फायदा? अ संयुक्त परिवार के बोझ ढ ढोते रहकर न वह स्वयं जी पाता, न अपने परिवार [पत्नी-बच्चों] के लिए कुछ कर पाता, और न ही उसमें अपने पिता के परिवार के लिए कुछ करने का उत्साह शेष बच पाता। वह झट से परिवार के साथ संबंध - विच्छेद करने का निर्णय लेकर भ्रमों के मायाजाल से मुक्त हो जाता है।

"भ्रमभंग" वर्तमान युग के निम्न-मध्यवर्गीय परिवार के संदर्भ में उभरे मोहभंग की यथार्थ अभिव्यक्ति है। जीवन की कटु वास्तविकताओं के एक नवयुवक व्दारा साक्षात्कार कथा है। "भ्रम के अन्धेरे में से ज्ञान का सूरज निकलता हैं।... भ्रमभंग जीवन की सच्चाइयों के साक्षात्कार की गाथा है।"[१५]

देवेशाजी ने प्रस्तुत उपन्यास में पारिवारिक संबंधों के संदर्भ में उभरे मोहभंग को एक विशिष्ट स्तर पर अभिव्यक्ति दी है। उन्होंने "परिवार" के साथ जुडे भ्रमों के टूटने की प्रक्रिया को अंकित किया है।- देवेशाजी ने "मोह" के बदले "भ्रम" शब्द का प्रयोग किया है जो अधिक सार्थक और सही लगता है। अत: "भ्रमभंग" शीर्षक को पढते ही पाठक

के मन में कथावस्तु को जानने की जिज्ञासा जाग उठती है |

८. निष्कर्ष

"भ्रमभंग की कथावस्तु के गठन एवं विकास की अवस्थाओं को लेकर देवेशजी ने शिल्पगत नवीन प्रयोग किये हैं | वे प्रयोगधर्मी रचनाकार हैं | अत: कथावस्तु की परम्परागत मानदण्डों की कसौटीपर प्रस्तुत कथावस्तु का मूल्यांकन नही किया जा सकता है |

स्पष्टत: देवेशजी ने "भ्रमभंग" में जो कथावस्तु प्रस्तुत की है वह मौलिकता में बेजोड है परन्तु पूर्वार्धी की मूल कथा की संवेदना पूरी तरह पाठकों को छू नहीं पाती | उत्तरार्धी की कथावस्तु बहुत वेदना विव्हल है | कथावस्तु में यह शिथिलता शायद आज के युग का परिणाम हो | आज चारों तरफ अनाथा, विद्रोह, संत्रास, कुण्ठा एवं घुटन व्याप्त है |

वर्तमान जीवन में मूल्य विघटित हो रहे हैं | अत: आज के उपन्यासों में कथावस्तु के तत्व का महत्व नहीं रहा है | बल्कि चरित्र को निर्माण करके उसके विचारों का विश्लेषाण किया जाता है | कथा क्रमोच्छेदित हो रही है | अत: "भ्रमभंग" में कथावस्तु का विकास परम्परागत तत्वों के आधारपर नहीं देखा जा सकता |

उपन्यास की कहानी का वास्तविक मर्म उसके "भ्रमभंग" शीर्षक में निहित है | कथ्य का केन्द्रिय भाव भी उसमें केन्द्रित है | अत: "भ्रमभंग" सार्थक और आकर्षक शीर्षक है |

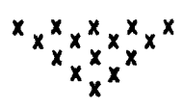

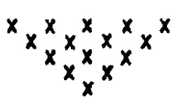

12443

A

-: सन्दर्भ :-

१. प्रा. सतीश पाण्डेय : "कथा-शिल्पि देवेश ठाकुर" : पृ. ८१

२. डॉ. गोपालराय : "समीक्षा" पत्रिका मई-जून १९७४ — —

३. देवेश ठाकुर : "भ्रमभंग" : पृ. १८७

४. वही : वही : पृ. १९५

५. वही : वही : पृ. १६७

६. वही : वही : पृ. १८७

७. वही : वही : पृ. १७६

८. वही : वही : पृ. २५

९. सम्पा. डॉ. ब्रम्हदेव मिश्र: "पाण्डुलिपि" : पृ. ५८
[डॉ. हनुमन्त नायडु : "भ्रमभंग : कथ्य और शिल्प"]

१०. देवेश ठाकुर : "भ्रमभंग" : पृ. २०४

११. वही : वही : पृ. २०३

१२. वही : वही : ६३

१३. वही : वही : पृ. ९७

१४. वही : वही : पृ. ११७

१५. सम्पाद. डॉ. नन्दलाल यादव : "देवेश ठाकुर : व्यक्ति, समीक्षक और कथाकार : पृ. १८०
[डॉ. सरजू प्रसाद मिश्र : "भ्रमभंग" का रचना संसार]